क्रु गया

स्नातक खण्ड -2
हिन्दी प्रतिष्ठा
चतुर्थ पत्र

प्रश्न★ चन्द्रगुप्त का चरित्र चित्रण

उत्तर चन्द्रगुप्त का चरित्र इतिहास के पट पर बुना गया है। कृतज्ञता, पाण्डित्य, कुलीनता, श्रीमानता, सुशीलता उसके चरित्र की विशेष निधि है।

साथ ही रूप यौवन सम्पन्न होना, उत्साह परिपुष्ट होना, अनुराग के हृदय स्निग्ध होना ये उसके चरित्र के आकर्षण के केन्द्र बिन्दु है।

चन्द्रगुप्त के नाटक मे चरित्र के दो पक्ष सम्पूर्ण रूप चित्रित है - प्रथम आत्मसम्मान और वीरता से बाधित, द्वितीय प्रेम भावना से परिपूर्ण उसकी कार्यविधि।

स्वातन्त्र्य को जनजीवन की पूँजी के रूप मे घोषणा करने वाले यह युवक प्रत्येक निरपराध आर्य की स्वतंत्रता के पक्ष का समर्थन करता हुआ मंच पर दिखाया जाता है।

निर्भिकता उसकी नस-नस में बसी हुई है। वह यवन शिविर मे भी यवन सेनापति के सम्मुख देशद्रोही आम्भीक को खरी खोटी सुनाता है।

इस निर्भीकता और वीरता के साथ-साथ उसमें दृढ़संकल्प और स्वावलम्बी प्रवृत्ति है। अपने माता-पिता, चाणक्य जैसे मन्त्रदाता गुरु और कन्धे से कन्धे मिलाकर चलने वाले सच्चे मित्र सिंहरण के चले जाने पर भी वह अपने दायित्व से विचलित नहीं होता।

सैन्य संचालन का गुण चन्द्रगुप्त को पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त है। चन्द्रगुप्त चरित्र का एक विशेष गुण है— कृतज्ञता स्वीकार करना। उपकारी के प्रति कृतज्ञ होना भारतीय रक्त में मिला हुआ है। सिल्यूकस ने चन्द्रगुप्त की भयंकर बाध से रक्षा की है।

सम्राट होने पर वह न्यायी बनता है। उसकी न्यायप्रियता सराहनीय है।

अब चन्द्रगुप्त के चरित्र का दूसरा पक्ष देखिए जिससे सिद्ध होता है कि वह केवल युद्ध व्यवसायी वीर ही नहीं है वरन् प्रेम और हृदय की भावुकता पर उसका कितना कलात्मक अधिकार व नियन्त्रण है।

प्रारम्भ में ही वह कल्याणी से कहता है — "यह अनुचर सेवा के लिए उपयुक्त

अवसर पर आ पहुँचा"। केवल उसी को देखने के लिए कार्नेलिया युद्ध क्षेत्र पहुँची है।

कल्याणी के अतिरिक्त मालविका और यवन कुमारी कार्नेलिया से भी चन्द्रगुप्त के प्रेमतन्तु प्रारम्भ से ही विकसित हुए हैं। कई बार दो नेत्र अपने सगोत्रियों से मिलकर चार हुए हैं।

इस प्रकार अपने चरित्र की निर्भीकता, उचित के लिए दृढ़ता, मित्रता में धैर्य व उपकार के लिए कृतज्ञता, गुरुजनों के लिए विनयशीलता, अपने कार्य में आत्मविश्वास एवं कर्तव्यपरायण तथा प्रेम के क्षेत्र में सहृदयता आदि गुणों से भी परिपूर्ण प्रारम्भ में राजकुमार बाद में सम्राट नाटक के सभी प्रमुख पात्रों को अपनी श्रीमानता एवं वीरता के लिए मुग्ध करता है।

इस प्रकार फिलिप्स कार्नेलिया, राक्षस, और नंद भी उसकी महत्ता स्वीकार करते हैं। इससे सिद्ध होता है कि 'चन्द्रगुप्त' नाटक का नायक चन्द्रगुप्त ही सिद्ध होता है।

— x —